अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 22 जून 2019

समय और स्वास्थ्य दो अनमोल संपत्ति हैं, जिन्हें हम तब तक पहचानते, जब तक कि वे समाप्त नहीं हो जाते...
डेनिस वेटली, *अमेरिकी लेखक*

मराठवाड़ा के बीड में पिछले तीन साल में साढ़े चार हजार से अधिक महिला मजदूरों के गर्भाशय निकाल लिए जाने के मामले में जांच रिपोर्ट आने के बाद राज्य सरकार को दोषी डॉक्टरों और लालची ठेकेदारों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी ही होगी।

अमानवीयता का चरम

महाराष्ट्र में मराठवाड़ा के बीड जिले में तीन साल में साढ़े चार हजार से अधिक गरीब महिलाओं के गर्भाशय निकाल लिए जाने के सनसनीखेज मामले का खुलासा विगत अप्रैल में हो जाने के बावजूद राज्य सरकार ने अब जाकर एक जांच कमेटी का गठन किया है, जो इस ज्वलंत मुद्दे पर उसकी उदासीनता का ही प्रमाण है। राज्य सरकार का यह रवैया तब है, जब गन्ना मजदूरों पर मीडिया रिपोर्टों के आधार पर राष्ट्रीय महिला आयोग महाराष्ट्र सरकार को विगत अप्रैल में ही नोटिस दे चुका है। तब सरकार ने डिस्ट्रिक्ट सिविल सर्जन की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की थी, जिसके मुताबिक, तीन साल में बीड में 4,605 महिलाओं के गर्भाशय निजी अस्पतालों में निकाले गए। दरअसल मीडिया रिपोर्टों में मराठवाड़ा के गन्ना मजदूरों के शोषण के जो ब्योरे आए, उसके बाद ही सरकार को हरकत में आ जाना चाहिए था। पता यह चलता है कि चार से पांच महीने तक चलने वाले गन्ना कटाई के बेहद व्यस्त सीजन में ठेकेदार मजदूरों को एक दिन भी छुट्टी न देने की शर्त पर काम पर रखते हैं। एक दिन छुट्टी लेने पर मजदूरों को पांच सौ रुपये जुर्माना देना पड़ता है! काम के दौरान महिलाओं को माहवारी न हो या वे गर्भधारण न कर सकें, इसलिए उन पर गर्भाशय निकलवा देने का दबाव बनाया जाता है। कई बार गर्भाशय निकलवाने के ऑपरेशन के लिए ठेकेदार महिला मजदूरों को अग्रिम धनराशि देते हैं, जिसे उनकी मजदूरी से काट लिया जाता है। बेहद कम उम्र में शादी कर मां बन जाने वाली ये गरीब महिलाएं गर्भाशय निकलवा कर गन्ना कटाई के सीजन में लगातार काम तो पा लेती हैं, पर पूरी उम्र हार्मोन असंतुलन, मोटापे, मानसिक अवसाद आदि से जूझती रहती हैं। एक तरफ केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने महिलाओं का प्रसूति अवकाश बढ़ाकर 26 सप्ताह कर दिया है, दूसरी ओर, महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना की

गठबंधन सरकार की नाक के नीचे पिछले तीन साल से महिला कामगारों के साथ इस किस्म की अमानवीयता जारी है। लिहाजा सिर्फ निजी अस्पतालों की शिनाख्त करना काफी नहीं है, इस सुनियोजित अपराध में लिप्त डॉक्टरों, अस्पतालों और ठेकेदारों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होने के साथ पीड़ित महिलाओं को हर्जाना दिया जाना चाहिए, और इसका भी ध्यान रखना चाहिए कि भविष्य में ऐसी एक भी घटना न घटने पाए।

मुजफ्फरपुर का सबक

बाल कुपोषण न केवल हमारे वर्तमान को प्रभावित करता है, बल्कि अगर हमने ध्यान नहीं दिया तो यह हमारे भविष्य को भी प्रभावित करेगा। मुजफ्फरपुर के सबक पर तत्काल ध्यान दिए जाने की जरूरत है।

बिहार में लीची उगाने के लिए मशहूर मुजफ्फरपुर में सौ से अधिक बच्चों की मौत एक्यूट इन्सेफेलाइटिस सिंड्रोम (एईएस) से क्यों हुई? इसको लेकर कई तरह की बातें कही जाती हैं, लेकिन अब हम जानते हैं कि ऐसा सिर्फ ढेर सारी लीची खाने के कारण नहीं हुआ, जैसा कि शुरुआती दिनों में अनुमान लगाया जा रहा था। विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा कई कारणों से हुआ है-लीची में विषाक्त पदार्थ, अत्यधिक गर्मी, आर्द्रता, कुपोषण और बदहाल सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा। इनमें से अंतिम दो कारणों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि ये हमारी राजनीतिक प्राथमिकताओं और इच्छाशक्ति के बारे में असहज करने वाले सवाल उठाते हैं।

पत्रलेखा चटर्जी
वरिष्ठ पत्रकार

किनके बच्चे भूखे सो जाते हैं? व्यापक स्वास्थ्य सुधारों के मौजूदा समय में स्वास्थ्य सेवा तक किनकी पहुंच है? सामाजिक और आर्थिक विषमताओं से भरे देश में भूख एक गंभीर राजनीतिक मुद्दा है, जिसे कई लोग झुठलाना चाहेंगे। बिहार भारत के सर्वाधिक गरीब राज्यों में से एक है। जो बच्चे मुजफ्फरपुर में बेवजह मर गए, वे बिहार के अत्यंत निर्धन परिवारों से थे।

जमीनी रिपोर्ट बताती है कि एईएस से मरने वाले ज्यादातर बच्चे महादलित समुदाय के हैं, जिनमें मुसहर और अनुसूचित जाति के लोग शामिल हैं। उनमें से ज्यादातर कुपोषित थे। यह याद रखने वाली बात है कि अच्छी तरह से पोषित बच्चे लीची का सेवन करने से आम तौर पर जोखिम का सामना नहीं करते हैं। मुजफ्फरपुर में अब तक हुई ज्यादातर मौतों के लिए हाइपोग्लाइकेमिया या खून में ग्लूकोज का स्तर कम होने को जिम्मेदार बताया गया है। जब कुपोषित बच्चे लीची का सेवन करते हैं और खाली पेट सो जाते हैं, तो उन्हें नुकसान होता है। लीची में पाए जाने वाले विषाक्त पदार्थ के कारण विशेष रूप से ऐसे मामलों में कई तरह की रासायनिक प्रतिक्रियाएं होती हैं, जो हाइपोग्लाइकेमिक एन्सेफैलोपैथी (खून में ग्लूकोज का स्तर बहुत कम

हो जाना) का कारण बनती हैं।

बिहार में एईएस कोई नई बात नहीं है। तीव्र इन्सेफेलाइटिस सिंड्रोम का प्रकोप राज्य के उत्तरी क्षेत्रों और उत्तर प्रदेश के पूर्वी भागों में पहले भी हुआ है, जो समान रूप से गरीबी से ग्रस्त है। ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी पुनरावृत्ति आम तौर पर उन क्षेत्रों में होती है, जो गरीब होते हैं और जहां बड़ी संख्या में बच्चे कुपोषित होते हैं और जहां सक्रिय प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली का अभाव होता है।

बिहार में बाल कुपोषण की कहानी कोई नई बात नहीं है। कुछ वर्ष पहले एक विशेषज्ञ रिपोर्ट में बताया गया था कि राज्य में पांच साल से कम उम्र के आधे से अधिक बच्चे कम वजन वाले या छोटे कद के थे, जो राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-3 के अनुसार कुपोषण के पुराने होने के संकेत देते थे। इसे स्वीकार करते हुए, बिहार सरकार और केंद्र सरकार ने एकीकृत बाल विकास सेवा निदेशालय (आईसीडीएस) द्वारा प्रशासित पूरक पोषण कार्यक्रम (एसएनपी) के लिए प्रति वर्ष 1,100 करोड़ रुपये देने की प्रतिबद्धता जताई थी। विशेषज्ञों का कहना है कि कार्यक्रम के आवंटित फंड का नियमित रूप से घपला होता है और जमीनी स्तर पर सार्वजनिक सेवा वितरण का अभाव है। रिपोर्ट में बताया गया है कि बिहार के तीन जिलों में 200 आंगनवाड़ियों में औचक दौरा करने पर पाया गया कि उनमें से 24 फीसदी दिन के समय बंद थे, जबकि उन्हें खुला होना चाहिए था, और भोजन केवल 59 फीसदी दिनों में दिया जाता था, जबकि उन्हें सब दिन दिया जाना चाहिए था। जब आंगनवाड़ियां खुली थीं और भोजन दिया गया था, तब 40 में से औसतन 22 बच्चे ही उपस्थित थे। और इन भोजन में, निर्धारित पौष्टिक तत्वों का केवल तीन चौथाई हिस्सा ही उपलब्ध था।

हालांकि इस स्थिति में सुधार आया है, लेकिन बहुत कम। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-4 का आधिकारिक आंकड़ा बताता है कि बिहार में पांच साल से कम उम्र के 48 फीसदी बच्चे (शहरी और ग्रामीण) छोटे कद हैं। बाल कुपोषण की यह घिनौनी कहानी माताओं और किशोर उम्र की गर्भावतियों के खराब पोषण की स्थिति से और जटिल हो जाती है। यह शर्मनाक तस्वीर केवल बिहार की ही नहीं है, बल्कि हिंदी भाषी क्षेत्र के कई अन्य राज्यों की भी है।

मुजफ्फरपुर में हाल ही में हुई बच्चों की मौत के सही कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है, लेकिन हम जानते हैं कि अत्यधिक गर्मी, कुपोषण और लीची के अत्यधिक सेवन के बावजूद उन बच्चों को बचाया जा सकता था। यहां दूसरा परेशान करने वाला सच सामने आता है। उनमें से बहुत से बच्चे आज जीवित होते, अगर उन्हें समय पर इलाज मिल पाता। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि प्रभावित क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा प्रणाली लगभग बेकार है।

बच्चों को रात में भोजन और समय पर पर्याप्त ग्लूकोज की आवश्यकता होती है। लेकिन दुखद है कि ऐसी व्यवस्था किए जाने के बावजूद अनियमितता की वजह से वर्ष 2016-18 में संकट और गहरा गया। इस वर्ष अग्रणी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा चलाए जाने वाले बेहद जरूरी जागरूकता अभियान में भी कमी आई है। हम अनुमान लगा सकते हैं कि ऐसा लोकसभा चुनाव की वजह से हुआ होगा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एईएस के कारण मरने वाले बच्चों के प्रत्येक परिवार को चार लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है, लेकिन मुजफ्फरपुर और अन्य जगहों पर, जहां बच्चे मर रहे हैं, रोकथाम के उपाय पर ध्यान केंद्रित करने और दीर्घकालीन उपाय तलाशने की जरूरत है।

बाल कुपोषण बच्चों के लिए जीवित रहने की संभावना को प्रभावित करता है, उनकी प्रतिरक्षा और साथ ही सीखने की क्षमता को कम करता है। यह बाद के जीवन में उनकी उत्पादकता को प्रभावित करता है। बाल कुपोषण न केवल हमारे वर्तमान को प्रभावित करता है, बल्कि अगर हमने ध्यान नहीं दिया तो यह हमारे भविष्य को भी प्रभावित करेगा। मुजफ्फरपुर के सबक पर तत्काल ध्यान दिए जाने की जरूरत है।

हांगकांग की स्वायत्तता की यह अंतिम लड़ाई नहीं है

अपनी कहानी

>> जोशुआ वोंग

अंब्रेला मूवमेंट समाप्त होने के बाद लोग उदास थे, क्योंकि हम वह नहीं प्राप्त कर सके जो हम चाहते थे, पर आगे जबर्दस्त बदलाव है। भले ही कैरी लैम ने प्रस्ताव वापस ले अलिया, पर अगला नेता अब भी बीजिंग द्वारा ही चुना गया है। यही कारण है कि हमारा प्रदर्शन जारी है।

***मेरा** जन्म वर्ष 1996 में ब्रिटिश हांगकांग में हुआ। बचपन से ही मैं डिस्लेक्सिया जैसी बीमारी से पीड़ित हूं। मेरे माता-पिता एक प्रोटेस्टेंट ईसाई हैं। मेरे पिता सेवानिवृत्त आईटी पेशेवर हैं। वह अक्सर मुझे वंचित लोगों के इलाके में घुमाने ले जाते थे। समाज में जागरूकता लाने की प्रेरणा मुझे उन्हीं से मिली।*

अंब्रेला मूवमेंट

मैंने युनाइटेड क्रिश्चियन कॉलेज में पढ़ाई की। मेरे अंदर संगठनात्मक और बोलने के कौशल का विकास कॉव्लून में ही चर्च समूहों में शामिल होने के बाद हुआ। मैंने और इवान लैम-यिन ने 2011 में एक छात्र कार्यकर्ता समूह, स्कॉलरवाद की स्थापना की। मैं 17 वर्ष का था, जब वर्ष 2014 में अंब्रेला मूवमेंट की शुरुआत हुई। यह आंदोलन हांगकांग की अर्ध स्वायत्त राजनीति में बीजिंग के अतिक्रमण के खिलाफ हुआ था और लोकतंत्र की बहाली का यह आह्वान केंद्र सरकार को सीधी चुनौती था। जून 2014 में, स्कॉलरवाद ने एक देश, दो प्रणालियों के तहत सार्वभौमिक मताधिकार के लिए हांगकांग की चुनावी प्रणाली में सुधार का मसौदा तैयार किया। इसके बाद हांगकांग के मुख्य कार्यकारी चुनाव में नागरिक नामांकन को शामिल करने की मैंने पुरजोर वकालत की और स्कूल की कक्षाओं का बहिष्कार करते हुए बीजिंग को लोकतंत्र समर्थक संदेश भेजा।

जेल भेज दिया गया

हांगकांग में हम सभी लोगों के बीच, केवल एक ही व्यक्ति था, जो यह तय कर सकता है कि वर्तमान आंदोलन चलेगा और वह लेउंग (क्षेत्र का मुख्य कार्यकारी) थे। यदि लेउंग हमारी मांगों को स्वीकार करते तो आंदोलन स्वाभाविक रूप से समाप्त हो जाता, पर वह नहीं माने। 27 सितंबर 2014 को, लोकतंत्र विरोधी प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने मुझे गिरफ्तार किया। हालांकि बाद में विरोध-प्रदर्शन होने पर रिहा कर दिया गया। इसके बाद भी हांगकांग की आजादी के लिए हमारा प्रदर्शन जारी रहा। मई 2019 में अदालत की अवमानना में दोषी ठहराते हुए मुझे दोबारा दो महीने के लिए जेल भेज दिया गया। जेल में पूछताछ के दौरान मुझे नग्न रखने के साथ अपमानित किया गया। लेकिन एक महीने बाद मुझे छोड़ दिया गया।

मेरा इरादा मजबूत हुआ है

यह अंतिम लड़ाई नहीं है, क्योंकि हांगकांग की सरकार और बीजिंग ने नागरिकों व छात्रों की एक पूरी पीढ़ी को असंतुष्ट कर दिया है। मुझे लगता है कि सरकार मुझ पर दोबारा मुकदमा चलाकर जेल भेज सकती है। लेकिन ये चीजें मुझे पराजित नहीं कर सकतीं, बल्कि मजबूत बनाती हैं। कम से कम मैं यह साबित करने की उम्मीद करता हूं ताकि लोगों को पता चल जाए, कि भले ही मुझे जेल हो गई हो, फिर भी मैं पीछे नहीं हटा हूं। मैं अब भी हांगकांग में लोगों के साथ विरोध की पहली पंक्ति में खड़ा हूं। हम अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपने शहर के नेता का चुनाव करने के लिए स्वतंत्र चुनाव की मांग करते हैं। जून के अंतिम हफ्ते में आयोजित जी -20 शिखर सम्मेलन में शामिल होने वाले विश्व के नेताओं से मैं आग्रह करता हूं, कि चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ एक बैठक करें और पूछें कि उन्होंने हांगकांग पुलिस को लोगों पर रबर की गोलियों का उपयोग करने की अनुमति कैसे दे दी। लोगों को अपनी सरकार से डरना नहीं चाहिए, सरकार को अपने लोगों से डरना चाहिए।

-हांगकांग स्वायत्तता प्रदर्शन के अगुवा के विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

फैक्ट फाइल

होर्मुज जलडमरूमध्य

>> होर्मुज जलडमरूमध्य की तस्वीर

यह जलडमरूमध्य 55 से 95 किलोमीटर तक चौड़ा है जो ईरान को अरब प्रायद्वीप से अलग करता है।

हाल ही में ओमान की खाड़ी में दो तेल टैंकरों पर और 12 मई को संयुक्त अरब अमीरात की ओर जा रहे चार टैंकरों पर हुए हमलों के बाद से अमेरिका ईरान के रिश्ते और खराब हो गए हैं। कुछ समय पूर्व ही अमेरिका ने ईरान पर कड़े प्रतिबंध लगाए थे और महत्त्वपूर्ण कटौती छूट भी हटा दी थी। ईरान ने अमेरिका को चेतावनी देते हुए कहा है कि वह होर्मुज जलडमरूमध्य को समुद्री यातायात के लिए बंद कर सकता है। होर्मुज जल डमरूमध्य को बंद करने के प्रयास से अमेरिकी हितों को गंभीर खतरा पैदा होगा, भले ही इसमें कोई अमेरिकी जहाज शामिल न हों। होर्मुज को ओरमुज जलडमरूमध्य के नाम से भी जाना जाता है। यह फारस की खाड़ी को ओमान की खाड़ी और अरब सागर से जोड़ता है। यह जलडमरूमध्य 55 से 95 किलोमीटर तक चौड़ा है और ईरान को अरब प्रायद्वीप से अलग करता है। इसमें कीश्म, होर्मुज व हेंजम (हेंग्म) द्वीप स्थित हैं। ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर सभी खाड़ी देशों का जलमार्गीय व्यापार इसी रास्ते से होता है। कच्चा तेल और तरल प्राकृतिक गैस का निर्यात ईरान, इराक, कुवैत, बहरीन, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात द्वारा इसी मार्ग से किया जाता है। विश्व के करीब 30% कच्चे तेल का व्यापार इसी रास्ते से होता है। तरल प्राकृतिक गैस का मुख्य निर्यातक कतर है, जो प्राकृतिक गैस को दूसरे देशों में भेजने के लिए इसी जलडमरूमध्य का प्रयोग करता है। वाणिज्यिक महत्त्व के साथ-साथ अपनी अवस्थिति के कारण यह सामरिक रूप से भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

डेढ़ सौ साल बाद मिली बाइबिल

हाल ही में अब्राहम लिंकन की एक बाइबिल मिली है, जो उन्हें 1864 में फिलाडेल्फिया में भेंट की गई थी।

न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए पीटर बेकर

वर्ष 1864 के युद्धकाल में अब्राहम लिंकन ने घायल सैनिकों के लिए आयोजित एक चैरिटी शो में भाग लेने के लिए फिलाडेल्फिया का दौरा किया था। उन्होंने सैनिकों के इलाज के उद्देश्य से धन जुटाने के लिए अपनी चर्चित 'मुक्ति उद्घोषणा' की 48 प्रतियां वितरित की थीं। बदले में लिंकन को भी एक उपहार मिला था। वह एक बाइबिल थी, जिसके पन्नों पर सोने के पानी का काम था और जिन पर 'विश्वास', 'उम्मीद' और 'सहायता' लिखा था। उस घटना के डेढ़ सौ से भी अधिक वर्षों के बाद इतिहासकारों ने पहली बार उस बाइबिल को खोज निकाला। अमेरिका के सोलहवें राष्ट्रपति से जुड़ी इस अनोखी कलाकृति के बारे में उन्हें पता भी नहीं था। लिंकन की हत्या के सात साल बाद उनकी विधवा ने यह किताब उनके दोस्त रेवरेंड नोइस डब्ल्यू माइनर को भेंट कर दी थीं।

माइनर लिंकन के घनिष्ठ मित्र थे और स्प्रिंगफील्ड में रहने के दौरान लिंकन रोज ही माइनर के घर जाते थे। लिंकन की हत्या के बाद उनके शव को शिकागो से स्प्रिंगफील्ड ले जाने वालों में माइनर भी थे, और

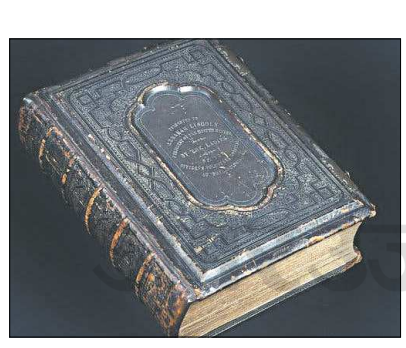

उन्होंने ही उनके अंतिम संस्कार में बाइबिल के कुछ अंश पढ़े थे। लिंकन की हत्या के बाद माइनर मैरी लिंकन के लगातार संपर्क में भी रहे। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के हाथों तक पहुंचती रही यह किताब लगभग डेढ़ सौ वर्षों तक नेपथ्य में पड़ी रही। यहां तक कि अब्राहम लिंकन के जीवन पर काम करने वालों और किताब लिखने वालों को भी इस बारे में कुछ मालूम नहीं था।

बृहस्पतिवार को स्प्रिंगफील्ड, इलिनोइस स्थित अब्राहम लिंकन प्रेसिडेंशियल लाइब्रेरी ऐंड म्यूजियम में पहली बार इसे प्रदर्शनी के लिए रखा गया। रेवरेंड नोइस डब्ल्यू माइनर के वंशजों ने इतने वर्षों तक बाइबिल को अपने पास रखने के बाद इसे सार्वजनिक करने का फैसला किया। 'मेरे लिए यह बाइबिल अब्राहम लिंकन को स्पर्श करने का माध्यम है। लिंकन से जुड़ी इस महत्वपूर्ण कलाकृति को हम इसके ऐतिहासिक महत्व के कारण तो संरक्षित करेंगे ही, यह बाइबिल लिंकन के जीवन में धर्म की भूमिका को समझने के लिए भी महत्वपूर्ण है,' एलेन लोव कहते हैं, जो लाइब्रेरी ऐंड म्यूजियम के कार्यकारी निदेशक हैं।

यह छठी बाइबिल है, जो लिंकन या उनके परिवार के पास थी। सबसे प्रसिद्ध बाइबिल वह है, जिस पर हाथ रखकर लिंकन ने 1861 में राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी, और जो वाशिंगटन स्थित लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस में सुरक्षित है। बराक ओबामा ने 2009 और 2013 में और डोनाल्ड ट्रंप ने 2017 में इसी बाइबिल को हाथ में रखकर राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी। लिंकन की धार्मिक आस्था के बारे में बहुत सारी कहानियां हैं। युवावस्था में उन्होंने अपने माता-पिता के बैपटिस्ट धर्म को खारिज कर दिया था और चर्च नहीं जाते थे। लेकिन अपने दो बेटों की असमय मृत्यु और दूसरी कुछ घटनाओं ने बाद में उन्हें धार्मिक सोच का बना दिया। 1864 में फिलाडेल्फिया में यह बाइबिल लेने के समय तो धर्म के प्रति उनका भरोसा बहुत बढ़ गया था।

इस हफ्ते के शब्द

मार्क एस्पर

पहले इराक युद्ध में हिस्सा लेने वाले पूर्व सैनिक मार्क एस्पर को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपना अस्थायी रक्षा मंत्री चुना है।

लिब्रा (LIBRA)

फेसबुक द्वारा क्रिप्टोकरेंसी लिब्रा लांच करने की घोषणा की चर्चा हो रही है। इस शब्द का अर्थ होता है- तराजू।

दुनिया में विस्थापित लोग

7 करोड़

लोग बीते वर्ष दुनिया भर में विस्थापित हुए, संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक।

सूत्र

>> डेविड थॉमस

कोई एक मुलाकात भी दिशा बदल देती है

मेरा जन्म न्यूजर्सी के अटलांटा सिटी में एक अविवाहित मां से हुआ था। लेकिन जब मैं मात्र छह हफ्ते का था, तो मुझे रेक्स और एयुलेवा थॉमस ने गोद ले लिया। मुझे गोद लेने वाली मां के देहांत के बाद मैं कुछ समय तक मिशिगन में एक छोटे से फॉर्म में अपनी दादी के साथ रहा, जिन्होंने मुझे जीवन में ईमानदार और विनम्र रहना सिखाया। उन्होंने ही मुझे ग्राहकों की सेवा करना, सम्मान करना और जीवन में कभी आसान राह न अपनाने की सलाह दी, जो बाद में मेरे जीवन में काम आई। मैं अपने पिता से ज्यादातर समय दूर ही रहा, क्योंकि वह पूरे अमेरिका में नए अवसरों की खोज करते हुए भटकते रहते थे। बारह वर्ष की उम्र में मैंने एक रेस्तरां में काम करना शुरू कर दिया। लेकिन रेस्तरां के मालिक से झड़प होने के कारण मैंने काम छोड़ दिया। लेकिन इस घटना के बावजूद रेस्तरां उद्योग के प्रति अपने समर्पण और जुनून को मैंने खत्म नहीं होने दिया। हालांकि मेरी निष्ठा से रेस्तरां के मालिक प्रभावित थे।

पंद्रह वर्ष की उम्र में मैं अपने गोद लेने वाले पिता के साथ इंडियाना चला गया, जहां मैंने कई रेस्तराओं में रोजगार के लिए हाथ आजमाया। और अंततः हॉब्बी हाउस रेस्तरां में मैंने काम करना शुरू कर दिया और इसी के साथ मेरी पढ़ाई छूट गई। मैंने स्वयं को रेस्तरां उद्योग के प्रति पूर्ण समर्पित कर दिया। वर्ष 1950 में मैंने अमेरिकी सेना में मेस सर्जेंट के रूप में काम किया और वहां तीन वर्ष तक रहा। वहां से लौटकर मैं फिर हॉब्बी हाउस में काम करने लगा। वहीं पर मेरी मुलाकात केंटुकी फ्राइड चिकेन (केएफसी) के संस्थापक कर्नल हरलैंड सैंडर्स से हुई और उस अनुभव ने मेरा जीवन बदल दिया। उन्होंने मुझे अपनी कुछ फ्रेंचाइजी दी, जिससे मुझे एक अवसर मिला। अगले कुछ वर्षों तक मैंने पूरे इंडियाना में केएफसी का विस्तार करने में उनकी मदद की। फ्रेंचाइजी की सफलता ने मुझे अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित किया। फिर 1969 में मैंने अपना खुद का रेस्तरां शुरू किया-वेंडीज। उसका नाम मैंने अपनी बेटी वेंडा के नाम पर रखा था। उसके बाद मैंने इस व्यावसायिक सफर में कई उतार-चढ़ाव देखे, लेकिन बिना घबराए अपने काम में जुटा रहा, जिसने अंततः मुझे सफलता दिलाई। मैंने अपने व्यावसायिक जीवन में ग्राहकों की सेवा और समुदाय के विकास को अग्रणी स्थान पर रखा।

आपको वही काम करना चाहिए, जिसमें दिलचस्पी हो, अन्यथा सफलता मिलने में मुश्किल होती है।